Code no : ~~196~~ 1.

306

Topic: ये आँसू कब तक बहेंगे ?

बिना कहकर आया मेहमान

14/11/2018
Wednesday

सूरज की अंतिम रंग-बिरंगे किरणों क्षितिज में डूबने की समय थी, पक्षियाँ की चहचहाने शांत होने लगीं। हवा की लेहरें मेरी चेहरा पर ठडक की अनुभव लायी, उस लेहरें मेरी आँसू को पोछकर गई, लेकिन उस आँसू एक नदी की तरह बह रहा था। क्योंकि उस दिन बिना कहना मेरी जिंदगी में एक 'मरण' की मेहमान आयी थी।

उस मेहमान मेरी आधी जिंदगी को अपनाया। मेरी सभी खुशीयाँ चुरा ली, मेरी मुस्कान ले गई। 'कैन्सर' नामक मरण मेरी जिंदगी पर स्थान लिया।

मैंने सुबह पेट दर्द की वजह आस्पताल गई थी। डॉक्टर के पूछने पर मैंने कहा की पिछले दो तिन महने से मुझे कभी कभी पेट पर दर्द का अनुभव हुआ था। डॉक्टर ने मुझे दवाईयाँ लिखी दि लेकिन उसने मुझे

जाने से पहले अपने रक्त की परिशोधन करने को कहा। डॉक्टर की कहने पर मैंने रक्त की परिशोद किया और घर लौटकर आया।

कुछ घंटों बाद शाम में उस खबर मेरी कानों में आई कि मैं एक कैन्सर व्यक्ति है। और मेरी पेट में कैन्सर है। रक्त की परिशोध करने में उस डॉक्टर को उस दुख खबर पहुचाना कि मुझे कैन्सर है।

कुछ कहने से पहले मेरी आखों में आँसू भरने लगी। मेरी हाथों पर पशीने लगाने लगी। हृदय की टडप मेरी कानों में सुनने लगी। डर की अंधकार फैलने लगी।

मुझे कुछ भी नही कह पाया। मेरी मन में एक हि चिंता भाग रहा था कि मेरी मेहमान आई है, उस मरण कि मेहमान जो मुझसे सब चिन कर ले जाएगी मेरी माता पिता को, मेरी छोटी, बहन, मेरी सारी परिवार मुझे प्यार करने वाले लोगों से दूर एक दूसरी दुनिया में।

उस दिन से मेरी जीवन से खुशीयाँ की लहरें दूर गई। प्रकाश की किरणों से रोशान हुई मेरी जिंदगी में दुःख और डर की अंधकार की निशा आई। मुस्कानों से प्रकाशीत हुई मेरी चेहरा में दुःख की आँसू बहने लगी।

मुझे किसी भी तरह से मन में शांत था खुशी की अनुभव नहीं क पाया। क्योंकि मुझे जानता था कि किसी भी समय उस मेहमान मेरी इस जिंदगी को ले जायगी दुसरी एक दुनिया में।

इसकी बारे मे सोचते रहे घर की बगीचे मे बैठ रहे मेरी सामने मेरी माँ आई। माँ की चेहरा में दुःख और डर मैंने महसूस किया। कई देर तक मुझसे कुछ नहीं कहा। रात की अंधकार फैलने लगी। आकाश मे तारो और चंद्रमा आई। तारो की चमचमाते देखने मेरी आँखो मे आँसू आई क्योंकि पिछले दिन रात जब मे तारो को गिन-गिनकर सो रही थी मैंने कभी नहीं सोचा की आज मेरी जिंदगी

मे पैसा एक खबर आएगी। धीरे से माँ मुझसे बात करने लगी। उसकी बातों में मुझे माँ की प्यार और पालन की महसूस मिली।

माँ की गोद में धीरे मैंने सोने कि शुरू कि जब मैंने देखा कि कई तितलियाँ मेरी आसपास घुमने लगी। उन तितलियाँ की रंग-बिरंगों 'किरणों' जैसे प्रकाशीत कर रही थी। रात की निशा मे उस दृश्य एक स्वर्गीय अनुभव जैसे मुझे लगी।

माँ मुझसे कहने लगी देखो कि उस तितलियाँ कितने कैसे घुम रही हैं। उसके रंग बिरंगे किरणों कितनी सुन्दर हैं। उस रंग बिरंगे किरणों देखकर हममें भी दिल मे खुशी खिल उठने लगी हैं।

माँ ने फिर कहने लगी कि 'डर' उस शब्द हि मरण कि एक परिणाम हैं जब हम डरता हैं तो मरण को हि हम अपने जिंदगी मे बुलाकर लाते हैं।

माँ कि इन बातों मेरी जिदगी पर बदलाव लाई। मेरी सोच पर बदलाव लाई।

मैंने अपने आप सोचा "कब तक मैं इस आँसू बहेंगे"? कब तक मैं ऐसे जिऊगी। क्या मैं इस पूरी जिदगी इस बात पर डरकर रहूगी?

नही! कभी नही! ~~मैंने इस~~ जिदगी मुझे खुशीयाँ से जिना है। जब तक मेरी जिवन की अंत हो, जब मैं इस मिट्टी पर मिलन होगी तब तक मैं खुशीयाँ से जिऊगी।

मैंने यह पहचान किया कि अपने आप में खुशीयाँ देखने वाले हर लोगा जिदगी में विजय होते है। मेरे मन में उस विचार आई कि उस तितलियाँ कि तरह खुशी की किरणों वाली पखों पहनकर आसमान तक उड जाऊ। ताकि मन की सारी दुःख और डर को भूल जाऊ

मेरी माँ कि बातों फिर से मेरी चिंता में आई कि यदि मैं मेरी इस रोग की अवस्था के बारे में सोचकर डरके रहुगी तो मैं हि डर होने वाले मरण को बुलाते रहे।

मैंने पहचान किया कि डर हमें और भी अधिक रोग ही बनाते हैं और दुःख की आँसू हमारे जिंदगी को चुरा लेता है।

इस तितलियाँ मेरी जिंदगी कि बदलाव में एक कारण थी। मैंने पहचाना कि हमारी खुशी में हि दुसरों कि खुशी हैं। हमारे एक एक मुस्कानों में दुसरो अपने दुःख हि भूल जाना हैं।

मुझे समझा कि कल के बारे में सोचकर आँसु बहते लोगों अपने आप को मरण बुला रही हैं। खुशीयाँ को तिरस्कार कर रही हैं। सच में जिवन में उन लोगों कुछ भी नही प्राप्त करता हैं। दुःखो और आँसू से उनके जिवन भर रहुगी और यह आँसू कब तक बहेंगे?